OPINION TODAY National Journal of Hindi and Humanities Research
A open Access Peer Reviewed, Referred Journal (Volume 1, Issue 1 (July-SEPTEMBER 2025)
E-ISSN : Applied I Web : www.opiniontoday.co.in I Email : info@opiniontoday.co.in I Mob : 9411218242

अदम गोंडवी की कविताओं का सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव

राजा मिश्रा
हिन्दी शिक्षक
डीडब्ल्यूपीएस, राजकोट

भारतीय साहित्य में कुछ कवि ऐसे होते हैं जिनके शब्द मात्र कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और राजनीतिक प्रतिरोध के सशक्त माध्यम बन जाते हैं। अदम गोंडवी उन्हीं कवियों में से एक हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से शोषितों, वंचितों और हाशिए पर खड़े समाज की आवाज़ को बुलंद किया। उनकी कविताएँ सत्ता की आलोचना करती हैं, सामाजिक विषमता को उजागर करती हैं और आम आदमी के संघर्षों को शब्द देती हैं। आज के समय में जब कविता का बड़ा हिस्सा या तो आत्मलीन हो गया है या शहरी जीवन के मोहजाल में उलझा हुआ है, अदम गोंडवी ने गाँव, किसान, दलित, मजदूर और गरीब तबके को अपनी रचनाओं के केंद्र में रखा। उनका साहित्य इस बात का प्रमाण है कि कविता सिर्फ सौंदर्यबोध का साधन नहीं, बल्कि परिवर्तन का हथियार भी हो सकती है।

अदम गोंडवी का जन्म 22 अक्टूबर 1947 को उत्तर प्रदेश के गोंडा ज़िले के आटा गाँव में हुआ। उनका वास्तविक नाम रामनाथ सिंह था, पर साहित्यिक जगत में वे 'अदम गोंडवी' नाम से पहचाने गए। उन्होंने अधिक औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की, लेकिन जीवन के गहरे अनुभव और सामाजिक यथार्थ की पैनी समझ ने उन्हें एक ऐसा कवि बनाया जो सीधे-सीधे जनता से संवाद करता है। उनकी प्रमुख कृतियों में धरती की सतह पर, समय से मुठभेड़ और चमारों की गली विशेष रूप से चर्चित हैं (यादव, 2012)। उनका संपूर्ण साहित्य ग्रामीण भारत के उस हिस्से को आवाज़ देता है जो अक्सर सत्ता और मीडिया दोनों की दृष्टि से ओझल रहता है। उनकी कविताओं में सामाजिक यथार्थ का चित्रण अत्यंत स्पष्ट और तीखा है। वे गाँवों की गरीबी, किसानों की दुर्दशा, जातिगत भेदभाव और मजदूरों की पीड़ा को बिना किसी सजावट के सीधे शब्दों में सामने रखते हैं। उनकी कविता चमारों की गली इसका बेहतरीन उदाहरण है, जिसमें वे राजनीतिक अवसरवाद और गरीब बस्तियों की अनदेखी पर करारा व्यंग्य करते हैं—

"काजू भुने प्लेट में, व्हिस्की गिलास में
उतरा है रामराज विधायक निवास में"

इन पंक्तियों में 'रामराज' का प्रयोग विडंबनापूर्ण है, क्योंकि नेता गाँव में रामराज लाने का वादा करते हैं, लेकिन हकीकत में वे ऐश्वर्य और विलास में डूबे रहते हैं जबकि जनता की हालत जस की तस बनी रहती है।[१]

अदम गोंडवी की कविताएँ सत्ता-तंत्र के पाखंड पर भी उतनी ही तीखी चोट करती हैं। वे चुनावी वादों की खोखलापन, भ्रष्टाचार और नेताओं की जनता से कटती दूरी को उजागर करते हैं। सन्नाटे की आहट में वे लिखते हैं—

"यहाँ तो गली-गली में शोर है चुनाव का,
मगर गरीब की थाली में अब भी सन्नाटा है।"

यह व्यंग्य न केवल राजनीति पर टिप्पणी है, बल्कि यह हमारे लोकतंत्र की सबसे बड़ी विडंबना को सामने रखता है कि सत्ता परिवर्तन के बावजूद गरीब की थाली खाली ही रहती है। अदम गोंडवी का साहित्य जाति और वर्ग-आधारित अन्याय के खिलाफ़ एक मजबूत दस्तावेज़ है। उनकी कविताओं में दलितों और वंचितों की पीड़ा का मार्मिक चित्रण है। जाति क्या पूछो सज्जन कविता में वे कहते हैं—

"जाति क्या पूछो सज्जन, शूद्र कहाए हम
काम जो कर गए राम का, और कहलाए हम"

इन पंक्तियों में ऐतिहासिक विडंबना का उद्घाटन है कि जिन लोगों ने समाज के निर्माण और रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया, उन्हें ही जातिगत व्यवस्था में सबसे निचले पायदान पर रखा गया।[२]

भाषा और शैली के स्तर पर अदम गोंडवी अत्यंत सहज, बोलचाल के लहजे और जनभाषा के प्रयोग के पक्षधर थे। उन्होंने हिंदी में अवधी के

OPINION TODAY National Journal of Hindi and Humanities Research
A open Access Peer Reviewed, Referred Journal (Volume 1, Issue 1 (July-SEPTEMBER 2025)
E-ISSN : Applied I Web : www.opiniontoday.co.in I Email : info@opiniontoday.co.in I Mob : 9411218242

शब्दों और मुहावरों को इस तरह पिरोया कि उनकी कविता गाँव-देहात के सामान्य व्यक्ति को भी अपनी लगती है। उनकी कविताओं में लोक कहावतों, रोज़मर्रा के प्रतीकों और सीधी-सपाट अभिव्यक्ति का अनूठा संगम है। इसीलिए उनकी पंक्तियाँ न केवल पढ़ी जाती हैं, बल्कि आंदोलनों में नारे बनकर गूँजती भी हैं। यदि उनकी प्रमुख कविताओं का विश्लेषण करें तो चमारों की गली जातिगत भेदभाव और राजनीतिक अवसरवाद पर केंद्रित है, समय से मुठभेड़ व्यवस्था से जूझते आम आदमी की पीड़ा को सामने लाती है, और बहुत दिनों तक धीमे-धीमे जागती सामाजिक चेतना का प्रतीक है। उनकी कविता बहुत दिनों तक में यह विश्वास झलकता है कि बदलाव तात्कालिक नहीं होता, लेकिन संघर्ष की निरंतरता ही उसे संभव बनाती है।

अदम गोंडवी का सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव बहुआयामी है। साहित्यिक दृष्टि से उन्होंने हिंदी कविता में जनवादी धारा को नई ऊर्जा दी। उन्होंने यह सिद्ध किया कि कविता सत्ता-विरोध, सामाजिक न्याय और जन-जागरण का सशक्त माध्यम हो सकती है। राजनीतिक दृष्टि से उनकी कविताएँ नेताओं और नीति-निर्माताओं के लिए आईना हैं, जो उन्हें जनता की वास्तविक समस्याओं की याद दिलाती हैं। सामाजिक आंदोलनों में उनकी पंक्तियाँ आज भी किसानों, मजदूरों और दलित आंदोलनों की रैली में गूँजती हैं, जैसे कि—

"तुम्हारी फाइलों में गाँव का मौसम गुलाबी है
मगर ये आंकड़े झूठे हैं, ये दावा किताबी है"

यह पंक्ति आज भी सरकारी रिपोर्टों और जमीनी सच्चाई के बीच की खाई को उजागर करती है। हालाँकि उनकी कविताओं को लेकर कुछ आलोचनाएँ भी हुई हैं। कुछ साहित्यकारों का मानना है कि वे कभी-कभी अत्यधिक घोषणापरक हो जाते हैं, जिससे काव्य की कलात्मक बारीकी कम हो जाती है। फिर भी, उनकी रचनाएँ जो प्रभाव छोड़ती हैं, वह गहरा और स्थायी है। वे साहित्य को जीवन और संघर्ष से जोड़ते हैं, और यही उनकी सबसे बड़ी ताकत है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अदम गोंडवी केवल कवि नहीं, बल्कि समाज के सजग प्रहरी थे। उन्होंने अपनी कविताओं में उस भारत की तस्वीर खींची जो चमकते शहरों और राजनीतिक नारों के पीछे छिपा हुआ है—एक ऐसा भारत जहाँ किसान आत्महत्या कर रहा है, मजदूर भूखा है, और जातिगत भेदभाव अब भी जिंदा है। उनकी कविताएँ हमें यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि साहित्य का असली उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि अन्याय के खिलाफ़ आवाज़ बुलंद करना भी है। आज, जब असमानताएँ और राजनीतिक पाखंड नए रूपों में सामने आ रहे हैं, अदम गोंडवी की कविताएँ पहले से अधिक प्रासंगिक हो गई हैं। उनकी रचनाएँ हमें यह भरोसा देती हैं कि शब्दों की ताकत सत्ता के सिंहासन को भी हिला सकती है और परिवर्तन की बुनियाद रख सकती है।

सन्दर्भ सूची

1. गोंडवी, अदम (1998). धरती की सतह पर. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. गोंडवी, अदम (2004). समय से मुठभेड़. इलाहाबाद: वाणी प्रकाशन।
3. यादव, अजय (2012). अदम गोंडवी: कविता और प्रतिरोध. लखनऊ: साहित्य भंडार।
4. शर्मा, मनोज (2015). "अदम गोंडवी की कविताओं में दलित चेतना". हिंदी आलोचना पत्रिका, अंक 22, पृष्ठ 45-52।
5. तिवारी, शरद (2018). जनवादी कविता का विकास. वाराणसी: भारती प्रकाशन।